विस्तृत रूपरेखा

I. यहूदियों का यरूशलेम लौटना और मन्दिर का पुनर्निर्माण (1:1-6:22)

A. लौटने और पुनर्निर्माण की कुस्रू की राजाज्ञा (1:1-4)

B. यहूदियों की प्रतिक्रिया और मंदिर के लिए भेंटें (1:5-11)

C. देश को लौटने वाले लोग (2:1-70)

1. अगुवे (2:1, 2)
2. "साधारण व्यक्ति" (2:2-35)
3. जो मंदिर को समर्पित थे (2:36-58)
   a. याजक (2:36-39)
   b. लेवीय (2:40-42)
   c. मंदिर के सेवक (2:43-58)
4. बिना पहचान के लोग (2:59-63)
5. कुल योग (2:64-67)
6. पहुँचना और मंदिर की भेंटें (2:68-70)

D. मंदिर की नींव रखना (3:1-13)

1. वेदी और बलिदानों का पुनःस्थापन (3:1-7)
2. मंदिर के पुनर्निर्माण का आरंभ और नींव का रखा जाना (3:8-13)

E. शत्रुओं द्वारा प्रगति को रोकने के प्रयास (4:1-24)

1. कुस्रू के राज्य के समय में प्रतिरोध (4:1-5)
2. क्षयर्ष के राज्य के समय में प्रतिरोध (4:6)
3. अर्तक्षत्र के राज्य के समय में प्रतिरोध (4:7-23)
4. कुस्रू के राज्य के समय में प्रतिरोध का परिणाम: मंदिर के कार्य का रुक जाना (4:24)

F. मंदिर के कार्य का पुनःआरंभ और पूरा होना (5:1- 6:22)

1. हाग्गै और ज़कर्याह द्वारा लोगों को प्रोत्साहन (5:1, 2)
2. फारसी अधिकारियों द्वारा लोगों से पूछ-ताछ (5:3-5)
3. दारा को भेजा गया पत्र (5:6-17)
4. दारा द्वारा कुस्रू की राजाज्ञा का खोजा जाना (6:1-5)
5. फारसी अधिकारियों को दारा का उत्तर (6:6-12)
6. मंदिर का पूर्ण होना और समर्पित किया जाना (6:13-18)
7. फसह का मनाया जाना (6:19-22)

II. एज्रा का लौटना और सुधार (7:1-10:44)

A. एज्रा, शास्त्री (7:1-8:36)
   1. यरूशलेम को एज्रा की यात्रा (7:1-10)
   2. अर्तक्षत्र की एज्रा को राजाज्ञा (7:11-26)
      a. जाने की अनुमति (7:11-13)
      b. एज्रा का नियुक्त-कार्य (7:14-20)
      c. नियुक्त-कार्य के लिए प्रावधान (7:21-24)
      d. व्यवस्था के पालन करवाने की प्राधिकृति (7:25, 26)
   3. एज्रा द्वारा परमेश्वर की स्तुति (7:27, 28)
   4. एज्रा का अपनी यात्रा का विवरण (8:1-36)
      a. उसके साथ आने वाले लोग (8:1-14)
      b. लेवियों को बुलाया जाना (8:15-20)
      c. परमेश्वर की सुरक्षा का आह्वान (8:21-23)
      d. मंदिर की बहुमूल्य वस्तुओं का याजकों को सौंपा जाना (8:24-30)
      e. यरूशलेम में आगमन (8:31-36)

B. एज्रा, सुधारक (9:1-10:44)
   1. अन्यजाति मूर्तिपूजक पत्नियों की दुविधा (9:1-15)
      a. अगुवों की सूचना (9:1, 2)
      b. एज्रा की प्रतिक्रिया (9:3, 4)
      c. दोष-स्वीकृति की एज्रा की प्रार्थना (9:5-15)
   2. बुरे प्रभावों से पृथक होना (10:1-44)
      a. समाधान सुझाया गया (10:1-4)
      b. समाधान मण्डली के समक्ष प्रस्तुत किया गया (10:5-11)
      c. लोगों की प्रतिक्रिया (10:12-17)
      d. उल्लंघन करने वालों की सूची (10:18-44)